IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11 ,S Iss 11A, 2022

"उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक नवाचारों के प्रति अभिवृत्ति, उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन"

डॉ. सुमन रानी
आचार्य
टांटिया विश्वविद्यालय
श्री गंगानगर

ललिता रानी
पी.एच.डी. शोद्यार्थी
टांटिया विश्वविद्यालय
श्री गंगानगर

—:सारांश :—

प्रस्तुत शोध में "उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक नवाचारों के प्रति अभिवृत्ति, उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन किया गया है। अध्ययन में प्राप्त आंकडों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गए है। यह अध्ययन राजस्थान के श्री गंगानगर जिले के राजकीय तथा गैर—राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कुल 400 अध्यापकों एवं 400 विद्यार्थियों पर किया गया है। अध्ययन में स्वनिर्मित शिक्षक शैक्षिक नवाचार अभिवृत्ति मापनी, उत्तरदायित्व मापनी, शिक्षक व्यावसायिक प्रतिबद्धता मापनी (डॉ. रविन्दर कौर, डॉ. सरबजीत कौर 'रानू' एवं श्रीमती सरवजीत कौर बराड़) तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उपयोग किया गया है। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि शैक्षिक नवाचार, उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी—समूह तथा शैक्षिक नवाचार, उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी—समूह की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर है।

मुख्य शब्द— शैक्षिक नवाचारों के प्रति अभिवृत्ति, उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता, शैक्षिक उपलब्धि, शिक्षक, विद्यार्थी।

प्रस्तावना :—

समाज तथा विद्यार्थियों को सही रास्ता दिखाने का पवित्र कार्य अध्यापक का होता है। वह निःस्वार्थ भाव से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करता है, लेकिन अनेक विद्वानों ने अपने अनुभव व सर्वेक्षण के उपरान्त यह निष्कर्ष निकाला है कि अध्यापक में जैसे—जैसे अनुभव बढ़ता जाता है, वैसे ही उसकी शिक्षण प्रक्रिया में नये प्रयोगों के प्रति उदासीनता आने लगती है। वह इसे एक रूटीन कार्य की तरह करता जाता है, जबकि एक उद्योग में अनुभव के बढ़ने पर कुशलता में वृद्धि का होना स्वाभाविक रूप से स्वीकार किया जाता है। अध्यापक के विषय में कहा जाता है कि चालीस वर्ष की आयु

के पश्चात् अध्यापक के अन्दर का अध्यापक मरने लगता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968, अध्यापक की जबाबदेही तय करने पर इस दृष्टिकोंण से भी बल देती है कि अध्यापक में उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करने हेतु एक निश्चित मानक हो व उनके उत्तरदायित्व को सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

अध्यापक में उत्तरदायित्व की समस्या का जन्म विनाशकारी महामारी के कीटाणुओं के जन्म के समान है क्योंकि इस स्तर पर उत्पन्न समस्या समाज के प्रत्येक स्तर तक तीव्रता से फैलती है एवं युवा वर्ग पर इसका सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। समाज का कोई भी अंग अध्यापक उत्तरदायित्व की समस्या से अछूता नहीं रहता। अतः माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्यों को वास्तविक रूप से प्राप्त करने हेतु प्रथम व सर्वाधिक महत्वपूर्ण शर्त माध्यमिक विद्यालयी अध्यापक में उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करने की है। यदि उत्तरदायित्व की भावना अध्यापक में उत्पन्न होगी तो वे अपने कर्तव्यों के प्रति जागरुक होंगे और समाज की उन्नति में योगदान दे सकेंगे साथ ही अपने कर्तव्यों का निर्वहन भी पूर्ण जिम्मेदारी से कर सकेंगे।

परिवर्तन प्रकृति तक ही सीमित नहीं है। समाज में भी प्रतिक्षण परिवर्तन हो रहा है। पुरानी मान्यताओं का स्थान नवीन मान्यताएं ले रही हैं। पुरातन विचार जा रहे हैं, नूतन विचार आ रहे हैं। पुरातन मूल्यों का स्थान, नूतन मूल्य ग्रहण कर रहे हैं। जल स्थिर रहेगा, तो जल सड़ेगा ही। यदि जल का प्रवाह जारी रहेगा– अर्थात् पुराने जल का स्थान, नया जल लेता रहेगा, तो जल शुद्ध बना रहेगा। इसी प्रकार जो समाज स्थिर, यथावत स्थिति में बना रहना चाहता है, नवीन विचारों को ग्रहण नहीं करता है, वह जीवित नहीं रह सकता। नये–नये विचारों को ग्रहण करने से समाज को नया जीवन प्राप्त होता है। उसमें नयी स्फूर्ति आती है और वह सदा अग्रणी स्थान प्राप्त करता है। वर्तमान युग विज्ञान का युग है। इससे प्रत्येक क्षेत्र की कार्य प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन आया है। शिक्षण की वैज्ञानिक विधियों एवं संसाधनो ने शिक्षा के स्वरूप को परिवर्तित कर दिया है। ज्ञान– विज्ञान के इस युग में हर क्षेत्र में परिवर्तन–युक्त नित नये–नये अविष्कार हो रहे हैं जिसकी अपनी गरिमा एवं महत्व है। समाज के सभी क्षेत्रों में परिवर्तन युक्त नवीन विचारों एवं अविष्कारों को आत्मसात् करने से इन सबको नयी स्फूर्ति, नया स्वरूप एवं विकास के नये रास्ते मिले हैं।

मनुष्य की बढ़ती भौतिक आवश्यकताएँ, समय का अभाव एवं धन इकठ्ठा करने की लालसा ने शिक्षा के वर्तमान स्वरूप में आमूल–चूल परिवर्तन ला दिया है। शिक्षा को समय सापेक्ष बनाने के लिए इसमें नवाचारों का उदय हुआ है। विद्यालय, समाज तथा अध्यापक के लिए विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि एक महत्वपूर्ण कारक है। शैक्षिक उपलब्धि जहाँ अध्यापक की गुणवत्ता को उजागर करती है वहीं यह विद्यालय की प्रतिष्ठा एवं समाज की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। यदि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षानुकूल नहीं होती है तो विद्यालय एवं अध्यापक के कार्य को सार्थक नहीं माना जा सकता है।

प्रस्तुत शोध का महत्व :–

सभी प्राणियों में श्रेष्ठ होने के कारण मनुष्य को स्वयं अपने मूल्य, आदर्श एवं कार्य शैली का निर्धारण करना होता है। सामान्यतः मूल्यों, आदर्शों एवं कार्यशैली का प्रतिबिम्बन समाज में होता है और इनका निर्माण विद्यालयों में। मुगल शासन काल में यद्यपि शिक्षा–प्रणाली में आमूल–चूल परिवर्तन हुये, किन्तु अध्यापक के उत्तरदायित्व पर संदेह प्रकट करने की स्थिति उत्पन्न नहीं हुई। अध्यापक अपने कर्तव्यों के प्रति पूर्णतया जागरुक बने रहे। ब्रिटिश कालीन शिक्षा व्यवस्था में पर्याप्त भिन्नता आई। शिक्षा की प्रणाली में भारी परिवर्तन हुये। शिक्षा के उद्देश्य एवं स्वरुप में भी परिवर्तन आ गया। शिक्षण विधियाँ तथा साधन आदि परम्परागत स्वरूप से पृथक हुये और उन्हें पर्याप्त रूप से आधुनिक बनाने की दिशा में प्रशासन द्वारा निरंतर प्रयास किये गये। किन्तु आधुनिकता के बावजूद भी अध्यापक में सामान्य नैतिकता बनी रही और अध्यापक के उत्तरदायित्व पर प्रश्न–चिन्ह नहीं लग सका।

स्वतन्त्रता के पश्चात देश का सम्पूर्ण परिवेश बदल गया व इससे शिक्षा भी अछूती नहीं रही। लोगों के दृष्टिकोंण में परिवर्तन हुआ एवं नई आर्थिक सामाजिक व्यवस्थाओं का नैतिक पतन एक सामान्य घटना बन गई। चारित्रिक मूल्यों का स्थान शनैः शनै मौद्रिक मूल्यों ने ले लिया। भौतिकवादी संस्कृति का तेजी से उदय हुआ और व्यक्ति अपने कर्तव्यों से विमुख होते गये। इस सबके परिणाम स्वरूप समाज के प्रत्येक वर्ग की भाँति अध्यापक वर्ग में भी उत्तरदायित्व की समस्या उत्पन्न हो गयी। अतः

अध्यापक में उत्तरदायित्व की भावना का मापन करने तथा उसको पुनर्जीवित करने की वर्तमान समय की आवश्यकता बन गयी।

मात्र उत्तरदायित्व का मापन करने से ही समस्या के कारणों को जानना संभव नहीं है। इसके लिए अध्यापक की व्यावसायिक प्रतिबद्धता तथा शैक्षिक नवाचारों के प्रति उनकी अभिवृत्ति को भी समझना होगा, इसके साथ ही इन सभी कारकों का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से संबन्ध को भी जानना आवश्यक है। अतः इस संदर्भ में यह जानना आवश्यक है कि विद्यार्थियों की शैक्षक उपलब्धि का अध्यापक की व्यावसायिक प्रतिबद्धता, उत्तरदायित्व एवं शैक्षक नवाचारों के प्रति अभिवृत्ति में किस प्रकार का संबन्ध है। समस्या के प्रमुख कारण कौन–कौन से हैं ? तथा इसका समाधान किस प्रकार किया जा सकता है?

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि प्रस्तुत अध्ययन में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से संबन्धित कारकों जैसे– अध्यापक की व्यावसायिक प्रतिबद्धता, उनमें उत्तरदायित्व की भावना तथा उनकी शैक्षिक नवाचारों के प्रति अभिवृत्ति का मापन करने तथा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ इन कारकों के संबन्ध को जानने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन की वर्तमान में आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि यह शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को अधिक से अधिक प्रभावी बनाने हेतु अध्यापक को अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्ध बनाने के प्रभावशाली उपाय खोजने की आवश्यकता पर बल देता है। इसके अलावा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने हेतु अध्यापक में उत्तरदायित्व की भावना का विकास करने एवं शैक्षिक नवाचारों के प्रति उनकी अभिवृत्ति को सकारात्मक बनाने की आवश्यकता को उजागर करता है। संक्षेप में, प्रस्तुत अध्ययन पूर्णतया प्रासंगिक है एवं वर्तमान समय में इसके अध्ययन की आवश्यकता है।

समस्या कथन –

"उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक नवाचारों के प्रति अभिवृति, उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक प्रतिबद्धता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन"

शोध शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

- शैक्षिक नवाचार :–

विश्व में वैज्ञानिक एवं तकनीकी दृष्टि से शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि करने तथा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को सरल एवं सुगम बनाने हेतु शिक्षा के क्षेत्र में विज्ञान एवं तकनीकी के प्रयोग को प्रस्तुत शोध में शैक्षिक नवाचार कहा गया है।

- अभिवृत्ति– अभिवृत्ति से तात्पर्य व्यक्ति के उस दृष्टिकोंण से होता है जिसके कारण वह किसी व्यक्ति, वस्तु, विचार आदि के प्रति किसी विशिष्ट प्रकार का व्यवहार करता है। प्रस्तुत शोध में अभिवृत्ति से तात्पर्य अध्यापक एवं अध्यापिकाओं का शैक्षिक नवाचारों के प्रति दृष्टिकोंण से है।

- उत्तरदायित्व :–

उत्तरदायित्व का अर्थ होता है–ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा तथा अपने कार्य के प्रति जबावदेही। अध्यापक उत्तरदायित्व से तात्पर्य अध्यापक की अपने व्यवसाय, विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा समाज के प्रति जबावदेही से है।

- व्यावसायिक प्रतिबद्धता :–

व्यावसायिक प्रतिबद्वता से तात्पर्य चयनित अध्यापक की अपने व्यवसाय के प्रति समर्पण की भावना से है।

- शिक्षक :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में अध्यापक से तात्पर्य राजकीय अथवा गैर–राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक एवं अध्यापिकाओं दोंनों से है।
- विद्यार्थी :– प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों से तात्पर्य ऐसे छात्र एवं छात्राओं से है जो अंग्रेजी विषय के साथ 9वीं कक्षा में अध्ययनरत् हैं तथा 9वीं कक्षा की अर्द्धवार्षिक परीक्षा में सम्मिलित हो चुके हैं।
- शैक्षिक उपलब्धि :

विद्यार्थी द्वारा विभिन्न विषयों में सीखे गये ज्ञान एवं व्यवहार परिवर्तनों के मात्रात्मक मापन को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में माना जाता है। प्रस्तुत शोधकार्य में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल एवं अभिक्षमता में विकास एवं परिवर्तन को उनकी शैक्षिक उपलब्धि के रूप में लिया गया है।

,

अध्ययन के उद्देश्य :–

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences
Official Publication of International Association of Food and Nutrition Scientists

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11 ,S Iss 11A, 2022

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शैक्षिक नवाचारों के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा शैक्षिक नवाचारों के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में उच्च उत्तरदायित्व रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा निम्न उत्तरदायित्व रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी –समूह की शैक्षिक उपलब्धि में तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में उच्च व्यावसायिक प्रतिबद्धता रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा निम्न व्यावसायिक प्रतिबद्धता रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिल्कपनाएँ :–

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शैक्षिक नवाचारों के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा शैक्षिक नवाचारों के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में उच्च उत्तरदायित्व रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा निम्न उत्तरदायित्व रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी –समूह की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में उच्च व्यावसायिक प्रतिबद्धता रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा निम्न व्यावसायिक प्रतिबद्धता रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श :–प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में राजस्थान के श्री गंगानगर जिले के राजकीय तथा गैर–राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कुल 400 अध्यापक एवं 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

1. शिक्षक शैक्षिक नवाचार अभिवृत्ति मापनी (स्वनिर्मित)
2. शिक्षक उत्तरदायित्व मापनी (स्वनिर्मित)
3. शिक्षक व्यावसायिक प्रतिबद्धता मापनी' (2011) डॉ. रविन्दर कौर, डॉ. सरबजीत कौर 'रानू' एवं श्रीमती सरवजीत कौर बराड़
4. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11 ,S Iss 11A, 2022

प्रदत्तों का विश्लेषण व विवेचन –

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में शैक्षिक नवाचारों के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा शैक्षिक नवाचारों के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 1

संस्थान	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
शैक्षिक नवाचारों के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह	200	77.79	9.596	2.608	अस्वीकृत
शैक्षिक नवाचारों के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह	200	74.85	12.729		

व्याख्या :– परिकल्पना संख्या 1 के अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे शैक्षिक नवाचारों के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा शैक्षिक नवाचारों के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर देखने हेतु विश्लेषित आकड़ों के आधार पर टी का मान ज्ञात किया गया जिसके अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे शैक्षिक नवाचारों के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा शैक्षिक नवाचारों के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व प्रमाप विचलन के आधार पर प्राप्त टी मान सार्थकता के स्तर 0.01 के सारणी मान से अधिक है। अतः यहॉ पर निर्धारित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है और निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे शैक्षिक नवाचारों के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा शैक्षिक नवाचारों के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में उच्च उत्तरदायित्व रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा निम्न उत्तरदायित्व रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी –समूह की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 2

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11 ,S Iss 11A, 2022

संस्थान	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
उच्च उत्तरदायित्व रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह	200	78.09	9.558	2.817	अस्वीकृत
निम्न उच्च उत्तरदायित्व रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह	200	75.22	10.808		

परिकल्पना संख्या 2 के अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे उत्तरदायित्व के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा उत्तरदायित्व के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर देखने हेतु विश्लेषित आकड़ों के आधार पर टी का मान ज्ञात किया गया जिसके अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे उत्तरदायित्व के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा उत्तरदायित्व के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व प्रमाप विचलन के आधार पर प्राप्त टी मान सार्थकता के स्तर 0.01 के सारणी मान से अधिक है। अतः यहॉ पर निर्धारित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है और निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे उत्तरदायित्व के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा उत्तरदायित्व के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

3. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में उच्च व्यावसायिक प्रतिबद्धता रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा निम्न व्यावसायिक प्रतिबद्धता रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या – 3

संस्थान	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
उच्च व्यावसायिक प्रतिबद्धता रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह	200	78.50	9.413	3.006	अस्वीकृत
निम्न व्यावसायिक प्रतिबद्धता रखने वाले अध्यापकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह	200	75.44	10.871		

परिकल्पना संख्या 3 के अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे व्यावसायिक प्रतिब(ता के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर देखने हेतु विश्लेषित आकड़ों के आधार पर टी का मान ज्ञात किया गया जिसके अनुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान व प्रमाप विचलन के आधार पर प्राप्त टी मान सार्थकता के स्तर 0.01 के सारणी मान से अधिक है। अतः यहॉ पर निर्धारित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है और निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों मे व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति उच्च अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह तथा व्यावसायिक प्रतिबद्धता के प्रति निम्न अभिवृत्ति रखने वाले शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थी–समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

उपयोगिता –

1. शैक्षिक नवाचार को अपनानाः शिक्षक नवीन शिक्षण विधियों और तकनीकों को अपनाने के लिए तैयार रहे, इससे छात्रों की सीखने की क्षमता में वृद्धि होगी। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में समयबद्ध परिणामोन्मुखी साक्षरता कार्यक्रमों की प्रभावी कियान्वित हेतु सकिय कदम उठाए जाए।
2. प्रशिक्षण और विकासः शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करें जो शैक्षिक नवाचार और व्यावसायिक प्रतिबद्धता पर केंद्रित हों।
3. नीतियों का विकासः शैक्षिक नवाचार और व्यावसायिक प्रतिबद्धता को प्रोत्साहित करने के लिए विद्यालय में नीतियों का विकास करें।

भावी शोध हेतु सुझाव –

1. शोध के लिए बड़े न्यादर्श का चयन किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्री ने राजकीय व गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को ही शामिल किया है। आगामी शोध के लिए अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को लेकर शोध कार्य किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल, आई.पी. (1988), रिसचेर्ज इन इमर्जिंग फील्डस् ऑफ एजूकेशन :कान्सेप्ट्स, ट्रेन्डस एण्ड प्रासपैक्ट्स. नई दिल्लीः स्टर्लिंग पब्लिशर्स कपिल, एच. के. (2006), सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11 ,S Iss 11A, 2022

2. पाण्डे डी. के. (2009) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अभिभावकों के शैक्षिक, सामाजिक व आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में उनके धर्मनिरपेक्षता व शैक्षिक नवाचार के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, जिज्ञासा, अंक 2 दिसम्बर, 2010, वाराणसी, पृष्ठ संख्या 33–39,
3. कृष्णलाल ''इमोशनल मैच्यूरिटी सेल्फ कोनफिडेन्स एण्ड एकेडमिक एचिवमेन्ट ऑफ एडोलसेन्स इन रिलेशन टू देयर जेन्डर एण्ड अरबन रूरल बैकराउण्ड '' AIJR Dec. 2015
4. डॉ. अरोड़ा रीता, सुदेश मारवाह (2005) '' शिक्षा मनो विज्ञान एवं सांख्यिकी'' शिक्षा प्रकाशन जयपुर पृश्ठ संख्या (407–430)
5. डॉ. शर्मा, वी. एस. ''शिक्षा मनोविज्ञान'' साहित्य प्रकाशन आगरा (2004)
6. सुखिया, एस.पी. (1990) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
7. श्रीमती शर्मा आर. के. व दुबे कृष्ण, श्रीमती बरौलिया डॉ. ए. ''शिक्षा के मनावैज्ञानिकीय आधार'' राधा प्रकाशन मन्दिर आगरा, पृष्ठ सं. 239,240